खरीफ कृषि संदेश डायरी
2025

जम्मू क्षेत्र

विकसित कृषि संकल्प अभियान
एक भारत, एक कृषि, एक टीम

29 मई – 12 जून, 2025

विस्तार निदेशालय
शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू

खरीफ कृषि संदेश डायरी – 2025

संकलनकर्ता:

डॉ. पवन कुमार शर्मा
डॉ. विजय कुमार शर्मा
डॉ. हेमा त्रिपाठी
डॉ. अमरीश वैद

योगदानकर्ता:

कृषि विज्ञान केंद्र, जम्मू
कृषि विज्ञान केंद्र, किश्तवाड़
कृषि विज्ञान केंद्र, डोडा
कृषि विज्ञान केंद्र, राजौरी
कृषि विज्ञान केंद्र, पुंछ
कृषि विज्ञान केंद्र, सांबा
कृषि विज्ञान केंद्र, कठुआ
कृषि विज्ञान केंद्र, रियासी
कृषि विज्ञान केंद्र, रामबन

प्रकाशन:

विस्तार निदेशालय
शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू

आमुख

प्रो. भूपेंद्र नाथ त्रिपाठी
माननीय कुलपति
स्कास्ट-जम्मू

विकसित कृषि संकल्प अभियान' के शुभारंभ अवसर पर खरीफ संदेश पॉकेट डायरी का प्रकाशन करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। यह राष्ट्रव्यापी अभियान 15 दिनों तक, 29 मई से 12 जून 2025 तक आयोजित किया जा रहा है, जो माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के मार्गदर्शन में "एक राष्ट्र, एक कृषि, एक दल" की भावना को साकार करता है।

यह SKUAST-जम्मू के लिए गौरव की बात है कि हम इस ऐतिहासिक एवं अभिनव पहल का सक्रिय भागीदार हैं। यह अभियान माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के "लैब से लैंड तक" दृष्टिकोण के अनुरूप किसानों तक अनुसंधान आधारित तकनीकों को पहुँचाने का माध्यम है।

यह खरीफ पॉकेट डायरी SKUAST-जम्मू के विस्तार निदेशालय का एक सार्थक प्रयास है, जिसका उद्देश्य है किसानों को खरीफ मौसम में समयबद्ध, संक्षिप्त और व्यावहारिक तकनीकी सलाह प्रदान करना। इसमें फसलवार सिफारिशें, कीट एवं रोग नियंत्रण उपाय, जल एवं पोषण प्रबंधन, और जलवायु-स्मार्ट तकनीकें सरल भाषा में सम्मिलित की गई हैं।

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। जम्मू क्षेत्र के किसानों के लिए ऐसी तकनीकी जानकारी एक विश्वसनीय मार्गदर्शक का कार्य करेगी। यदि हम विभागों, संस्थाओं, विश्वविद्यालयों और कृषक समुदायों के बीच समन्वय और एकजुटता से कार्य करें, तो भारतीय कृषि में चमत्कारी परिवर्तन संभव है।

मैं इस डायरी के निर्माण में जुड़े विस्तार निदेशालय के दल, वैज्ञानिकों और सभी भागीदारों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह प्रकाशन किसानों के लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

हार्दिक शुभकामनाएँ

प्रो. भूपेंद्र नाथ त्रिपाठी

प्रस्तावना

डॉ. अमरीश वैद
निदेशक प्रसार
स्कास्ट-जम्मू

मुझे यह कहते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि यह खरीफ सन्देश पॉकेट डायरी, 29 मई से 12 जून 2025 तक चलने वाले 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' के अंतर्गत प्रकाशित की जा रही है। यह 15 दिवसीय राष्ट्रीय अभियान, भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा ICAR एवं राज्य के कृषि विश्वविद्यालयों के समन्वय से चलाया जा रहा एक ऐतिहासिक प्रयास है।

यह डायरी स्कास्ट-जम्मू के विस्तार निदेशालय द्वारा किसानों तक खरीफ मौसम में उपयोगी और व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु तैयार की गई है। इसमें फसलों की वैज्ञानिक खेती, कीट-रोग प्रबंधन, पोषण एवं जल प्रबंधन तथा मौसम आधारित तकनीकी सलाह दी गई है, जो जम्मू क्षेत्र की जलवायु परिस्थितियों के अनुरूप है।

इस अभियान का उद्देश्य वैज्ञानिकों और किसानों के बीच द्वि-दिशात्मक संवाद स्थापित करना है—जिससे किसान लाभान्वित हों, और साथ ही वैज्ञानिक अनुसंधान की दिशा भी जमीनी अनुभवों से समृद्ध हो। यह डायरी किसानों को वैज्ञानिक सोच अपनाने और नई तकनीकों से जुड़ने के लिए प्रेरित करेगी।
मुझे यह कहने में गर्व है कि विस्तार निदेशालय का दल इस अभियान में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। डायरी को इस रूप में तैयार किया गया है कि यह किसानों के खेत और जीवन का सरल लेकिन प्रभावी उपकरण बने।
मैं इस सराहनीय प्रयास के लिए विस्तार निदेशालय, वैज्ञानिक दल, और सहयोगी संस्थानों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पॉकेट डायरी खरीफ फसलों के बेहतर उत्पादन में मील का पत्थर साबित होगी।

जय किसान, जय विज्ञान।
विकसित भारत – विकसित कृषि।

डॉ. अमरीश वैद

जम्मू क्षेत्र में खरीफ ऋतु के लिए कृषि परामर्श

जम्मू क्षेत्र को तीन कृषि-जलवायु क्षेत्रों में विभाजित किया गया है: उप-उष्णकटिबंधीय (समुद्र तल से 800 मीटर तक), उप-समशीतोष्ण (800 से 1500 मीटर तक), और समशीतोष्ण (1500 मीटर से ऊपर)। सिंचित मैदानी क्षेत्रों में धान प्रमुख फसल है, जबकि पहाड़ी इलाकों में वर्षा आधारित प्रणाली के अंतर्गत आमतौर पर मक्का की खेती की जाती है। रबी फसलों की कटाई के बाद, खेतों की गहरी जुताई करें ताकि उच्च तापमान का उपयोग कर मिट्टी में पाए जाने वाले रोगजनक बीजाणुओं को नष्ट किया जा सके, और कटाई के बाद कीट संक्रमण से बचाव के लिए रोकथामात्मक उपाय किए जा सकें। खरीफ मौसम के लिए फसलवार कृषि परामर्श नीचे प्रस्तुत किया गया है:

धान (Paddy)

नर्सरी में बुवाई से पहले धान के बीज को 8 लीटर पानी में कार्बेन्डाजिम 10 ग्राम + स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 3 ग्राम/5 किग्रा बीज की मात्रा में मिलाकर 24 घंटे तक भिगोकर रखें। उप-उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में ब्लास्ट रोग रोधी मोटे/अर्ध-सुंदर किस्में जैसे SJR-5, जया, पीआर-113, पीएचबी-71, रत्ना का उपयोग करें। सुपरफाइन में जम्मू बासमती-129 और पूसा बासमती- 1 1 2 1 उपयुक्त हैं। समशीतोष्ण/उप-समशीतोष्ण क्षेत्रों के लिए जल्दी पकने वाली, ब्लास्ट तथा ठंड सहनशील किस्में जैसे चीन-1039, गीज़ा-14, क-84, क-343, क-39 को प्राथमिकता दें।

Blast disease

धान की नर्सरी की तैयारी के लिए सूखी या गीली विधि में से किसी एक को अपनाते हुए नर्सरी बेड को अच्छी तरह तैयार करें। प्रति 10 वर्ग मीटर क्षेत्र में 15 किलोग्राम अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद, 60 ग्राम यूरिया तथा 50 ग्राम डीएपी मिलाएं ताकि शुरुआती विकास के लिए पौधों को पर्याप्त पोषक तत्व मिल सकें। सुपरफाइन या मोटे किस्मों के लिए प्रति एकड़ 16–18 किलोग्राम बीज का

प्रयोग करें, जिसमें प्रति टीले में दो या अधिक पौधे रखें। हाइब्रिड किस्मों के लिए बीज मात्रा 6 किलोग्राम प्रति एकड़ पर्याप्त होती है। रोग नियंत्रण के लिए बीजों को कॉपर ऑक्सीक्लोराइड @ 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

Stem Borer

खरपतवारों को हाथ से नियंत्रित करें या ब्यूटाक्लोर 5G (1.5 किग्रा/500 वर्ग मीटर) या प्रीटिलाक्लोर (20 ग्राम/500 वर्ग मीटर) का उपयोग करें। 30:12:8 किग्रा N:P:K + 8 किग्रा ZnSO4/एकड़ डालें; पोखर, टिलरिंग और पैनिकल अवस्थाओं पर N को विभाजित करें। पोखर बनने पर पूरा DAP, MOP, $ZnSO_4$ और 1/3rd N डालें; बचे हुए N को टिलरिंग और पैनिकल आरंभिक अवस्थाओं पर विभाजित करें, टॉप ड्रेसिंग से पहले पानी निकाल दें.

रासायनिक खरपतवार नियंत्रण के लिए, रोपाई के बाद ब्यूटाक्लोर 12 किग्रा/एकड़ या 10 DAT पर एनिलोफोस + इथोक्सी सल्फ्यूरॉन (500 + 60 मिली/एकड़) का उपयोग करें। बासी बीज-बिस्तर और ग्लाइफोसेट (0.6 किग्रा/एकड़) या पैराक्वाट (0.32 किग्रा/एकड़) के साथ खरपतवार चावल का प्रबंधन करें।

ब्लास्ट के प्रबंधन के लिए, फसल पर ट्राइसाइक्लाज़ोल @ 0.06% या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन + डिफ़ेनोकोनाज़ोल @ 0.1% का छिड़काव करें। स्टेम बोरर के लिए, 5-7.5 सेमी खड़े पानी में कार्टैप हाइड्रोक्लोराइड 4 जी (8 किग्रा / एकड़) डालें। 72 घंटे तक पानी न बहाएँ और न ही सिंचाई करें। 5% डेड हार्ट या एक अंडे का द्रव्यमान / वर्ग मीटर होने पर कार्टैप हाइड्रोक्लोराइड 50 एसपी (240 ग्राम / एकड़) का छिड़काव करें।

मक्का

हाइब्रिड (गंगा सफ़ेद-2, विवेक-25, HQPM-1) या कंपोजिट (मानसर, C-6, C-2) उगाएँ; लाइन में बोने के लिए 8 किलोग्राम/एकड़ बीज, छिटकने के लिए 12 किलोग्राम और पहाड़ियों में 14-16 किलोग्राम बीज का

उपयोग करें। कटवर्म-प्रवण क्षेत्रों में बीज को थिरम/ कैप्टन (3 ग्राम/ किलोग्राम) या कार्बेन्डाजिम (2 ग्राम/ किलोग्राम) + क्लोरपाइरीफॉस (5 मिली/किलोग्राम) से उपचारित करें। बोने से 2-3 सप्ताह पहले 6 टन FYM/एकड़ डालें; FYM के साथ, NPK को 25% कम करें; अन्यथा, 24:16:8 किलोग्राम नाइट्रोजन, फास्फोरस पोटाश + 4 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति एकड़ का उपयोग करें. संकर बीज के लिए 75×20 सेमी और मिश्रित बीज के लिए 60×20 सेमी की दूरी बनाए रखें; 0.4 किलोग्राम/एकड़ की दर से एट्राजीन का उपयोग करें या 15 और 30 दिनों पर हाथ से खरपतवार निकालें। 40 दिनों तक खरपतवार मुक्त रखें; स्थिरता और नमी के लिए 30 दिनों पर मिट्टी चढ़ाएँ।

Blister Beetle

Stem Borer

कीटों के लिए, आखिरी जुताई में क्लोरपाइरीफॉस 1.5% डी (10 किग्रा/एकड़) डालें, लाइट (2/एकड़) और फेरोमोन ट्रैप (6/एकड़) का उपयोग करें, मेथिल डेमेटन, साइपरमेथ्रिन या कार्टैप हाइड्रोक्लोराइड को व्हर्ल में स्प्रे करें। मक्का में ब्लिस्टर बीटल, कट वर्म, स्टेम बोरर और आर्मी वर्म के लिए, एसिटामिप्रिड 20एसपी @ 0.2 ग्राम/लीटर या क्लोरपाइरीफॉस 20ईसी @ 480 मिली/एकड़ का उपयोग करें, कट वर्म के लिए मिट्टी में क्लोरपाइरीफॉस 1.5% डी @ 10 किग्रा/एकड़, स्टेम बोरर के लिए व्हर्ल में कार्टैप हाइड्रोक्लोराइड 4जी @ 8 किग्रा/एकड़ का उपयोग करें, और ब्लिस्टर बीटल के लिए ट्रैप क्रॉपिंग (भिंडी/अरहर) और मैन्युअल बीटल रिमूवल अपनाएं। स्मट्स के लिए, बीज को 2 ग्राम/किलोग्राम की दर से कार्बेन्डाजिम/कार्बोक्सिन से उपचारित करें; डंठल सड़न के लिए, कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3 ग्राम/लीटर से छिड़काव करें या ब्लीचिंग पाउडर 10 किग्रा/एकड़ की दर से डालें; पत्ती झुलसा के लिए, रोग के शुरू होने पर 0.1% प्रोपिकोनाज़ोल का छिड़काव करें।

बाजरा

2 किलोग्राम संकर बीज/एकड़ का उपयोग करें, 40:24:10 किलोग्राम एनपीके/एकड़ का उपयोग करें, तथा पत्ती कैटरपिलर और वीविल जैसे कीटों का प्रबंधन क्लोरपाइरीफॉस 1.5% डी @ 10 किलोग्राम/एकड़ के साथ करें।

संकर ज्वार (सोरघम)

5 किलोग्राम बीज/एकड़ 20:12:6 किलोग्राम एनपीके के साथ बोएं; शूट फ्लाई और स्टेम बोरर जैसे कीटों के लिए, कार्टेप हाइड्रोक्लोराइड 4 जी @ 8 किलोग्राम/एकड़ केंद्रीय भंवर में 10-20 डीएएस पर डालें।

तिल

जुलाई में 800 ग्राम -1 किलोग्राम बीज/एकड़ का उपयोग करें; बालों वाले कैटरपिलर और व्हाइटफ्लाई जैसे कीटों के लिए, क्लोरपाइरीफॉस 20ईसी @ 2 मिली/लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल @ 0.3 मिली/लीटर का छिड़काव करें।

माश (उड़द)

प्रति एकड़ 6–8 किलोग्राम बीज का प्रयोग करें; अनुशंसित किस्मों में पंत यू-19, उत्तरा, पंत यू-31, एनडीयू 99-3, केयूजी 479 शामिल हैं। बालदार सूंडी और सफेद मक्खी के प्रबंधन हेतु क्लोरपायरीफॉस 20EC @ 2 मि.ली./लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 SL @ 0.3 मि.ली./लीटर की दर से छिड़काव करें।

मूंग (हरित मूंग)

प्रति एकड़ 6–8 किलोग्राम बीज का प्रयोग करें; अनुशंसित किस्मों में पंत मूंग-6, पूसा विशाल, एसएमएल 668, पूसा 0672, सत्य शामिल हैं। पीलिया (YMV) और चूसक कीटों के नियंत्रण के लिए रोगरोधी किस्मों का उपयोग करें तथा डाईमेथोएट 30 EC @ 1 मि.ली./लीटर या थायमेथोक्सैम @ 0.03% का छिड़काव करें।

राजमाश (भद्रवाह लोकल/चिंता सेलेक्शन)

मक्का के साथ सहफसली (पंक्ति दूरी 75 × 20 सेमी) में बोएं; प्रति एकड़ 9.5 किलोग्राम बीज का प्रयोग करें; बीज को कॉपर ऑक्सीक्लोराइड @ 3 ग्राम/किलोग्राम बीज से उपचारित करें। एफिड्स और एन्थ्राक्नोज के नियंत्रण के लिए क्लोरोथैलेनिल @ 2 ग्राम/लीटर की दर से फसल पर छिड़काव करें।

चारे की फसलें

बाजरा और ज्वार खरीफ की प्रमुख चारे की फसलें हैं, जो सिंचित एवं वर्षा आधारित दोनों परिस्थितियों में उपयुक्त होती हैं। बाजरा की अनुशंसित किस्मों में जायंट बाजरा, एफबीसी-16, पीसीबी 164 और ज्वार की किस्मों में एमपी चारी, हरियाणा चारी-260, प्रोग्रो चारी (SSG-998) शामिल हैं।

गन्ना

गन्ने की खेती जम्मू और कठुआ के कुछ हिस्सों में की जाती है। COJ-64, COJ-81, CO-1148 जैसी उच्च उत्पादनशील किस्में अनुशंसित हैं। दीमक नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफॉस, बोरोर नियंत्रण के लिए कार्टाप, तथा लाल सड़न (रेड रॉट) और ग्रासी शूट जैसे रोगों के लिए रोगरोधी किस्मों एवं उपयुक्त छिड़काव का प्रयोग करें।

केसर

केसर की खेती के लिए 20–24 क्विंटल कंद/एकड़ की आवश्यकता होती है। उर्वरक सिंचाई (फर्टिगेशन) में 8 किग्रा यूरिया, 24 किग्रा डीएपी एवं 13 किग्रा एमओपी/एकड़ का उपयोग करें। प्रबंधन में गहरी जुताई, उठी हुई क्यारियां, रोगमुक्त कंदों का चयन और चूहों का नियंत्रण शामिल है।

सब्जियां

बीज बोने से पहले कार्बेन्डाजिम या थिरम @ 2 ग्राम/किलोग्राम बीज या ट्राइकोडरमा विरडी @ 5 ग्राम/किलोग्राम बीज से उपचार करें ताकि मिट्टी जनित रोगों से बचाव हो सके। खेत की तैयारी के समय 8–10 टन/एकड़ सड़ी हुई गोबर की खाद मिलाएं। आधा यूरिया, पूर्ण डीएपी और एमओपी की मात्रा बुवाई/रोपाई के समय दें और शेष आधा यूरिया 30 दिन बाद टॉप ड्रेसिंग के रूप में दें।

बैंगन:

पूसा पर्पल लॉन्ग, पूसा क्रांति, पूसा अंकुर जैसी किस्मों का उपयोग करें; बीज की मात्रा 160–180 ग्राम प्रति एकड़ हो। साथ में अनुशंसित मात्रा में गोबर की सड़ी खाद, 82.4 किग्रा यूरिया, 52.8 किग्रा डीएपी और 20.4 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश (एमओपी) प्रति एकड़ डालें।

एफिड, जेसिड और सफेद मक्खी जैसे कीटों के लिए डेल्टा या स्टिकी ट्रैप @ 8 प्रति एकड़ लगाएँ; यदि कीट दिखाई दें, तो इमिडाक्लोप्रिड @ 0.3 मिली/लीटर या डाइमेथोएट @ 2 मिली/लीटर का छिड़काव करें।

Brinjal Fruit & Shoot Borer

फल एवं तना छेदक की रोकथाम के लिए रोपाई के 15 दिन बाद से फेरोमोन ट्रैप @ 4 प्रति एकड़ लगाएँ। साथ ही, प्राकृतिक शत्रुओं को आकर्षित करने हेतु सौंफ या धनिया की कतारों को खेत में रोपें और 20 दिन बाद से हर 15 दिन पर साइपरमेथ्रिन @ 1 मिली/लीटर का छिड़काव करें।

मिर्च:

मिर्च की किस्में जैसे NP-46 A, पूसा ज्वाला, CH-1 आदि को उप-समशीतोष्ण/ उप-उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगाएँ। बीज की मात्रा 280–320 ग्राम प्रति एकड़ रखें और पौधों की दूरी 45×30 सेमी रखें।

Crinkling in chilli due to mite infestation

प्रति एकड़ 10 टन सड़ी गोबर खाद, 82.4 किग्रा यूरिया, 52.8 किग्रा डीएपी और 20.4 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश (एमओपी) का प्रयोग करें। फूल या फल झड़ने की समस्या को रोकने के लिए 50 पीपीएम एनएए (NAA) का छिड़काव फूल आने की अवस्था में करें।

डैम्पिंग-ऑफ रोग से बचाव के लिए बीज का उपचार करें। विल्ट (Wilt) रोग पर नियंत्रण के लिए उचित जल निकासी, रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें, तथा रोपाई से पहले पौधों की जड़ों को क्लोरोथालोनिल 0.2% + स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 100 पीपीएम के घोल में डुबोकर उपचारित करें। माइट (कण) नियंत्रण हेतु डिकॉफोल 18.5 EC @ 3 मिली/लीटर या वेटेबल सल्फर @ 2 मिली/लीटर का छिड़काव करें।

टमाटर:

पूसा रूबी, पूसा 120 और मार्गलोब जैसी किस्मों का चयन करें। 4–5 सप्ताह पुरानी पौध को 60×45 सेमी की दूरी पर रोपित करें। प्रति एकड़ 100 किग्रा यूरिया, 52.8 किग्रा डीएपी और 40.5 किग्रा एमओपी का प्रयोग करें। 1 हेक्टेयर क्षेत्र के लिए 5 मरला नर्सरी पर्याप्त है।

रोग प्रबंधन:

अर्ली ब्लाइट नियंत्रण के लिए मैंकोजेब @ 0.25% का छिड़काव करें। ब्लॉसम एंड रॉट (कैल्शियम की कमी) के प्रबंधन हेतु कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट का छिड़काव करें। फलों के फटने (बोरॉन की कमी) को रोकने के लिए बोरेक्स @ 0.3–0.4% की तीन बार स्प्रे करें — एक बार नर्सरी में, दूसरा 3–4 सप्ताह और तीसरा 5–6 सप्ताह रोपाई के बाद। बकी रॉट नियंत्रण के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड @ 0.3% का छिड़काव करें।

भिंडी (Okra):

वर्षा ऋतु के लिए उपयुक्त किस्मों में अर्का अनामिका, वर्षा उपहार, पूसा A-4, हिसार उन्नत, हिसार नवीन, जम्मू ओkpa-05 और पंजाब पद्मिनी शामिल हैं। 60×45 सेमी दूरी पर बुवाई करें और बीज दर 4.8–6.0 किग्रा/एकड़ रखें।

उर्वरक आवश्यकता: प्रति एकड़ 82 किग्रा यूरिया, 52.8 किग्रा डीएपी, और 40.8 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश का प्रयोग करें।

निंदान नियंत्रण: पेंडिमेथालिन @ 0.3 किग्रा/एकड़ का पूर्व उगने वाला छिड़काव करें। 30 दिन बाद एक बार हाथ से निराई-गुड़ाई करें।

कीट नियंत्रण: एफिड्स, जैसिड्स और सफेद मक्खी के लिए, फूल आने के बाद मिथाइल डेमेटॉन 25EC @ 1 मि.ली./लीटर, डाईमेथोएट 30 EC @ 2 मि.ली./लीटर, या मेलाथियान 50 EC @ 2 मि.ली./लीटर का छिड़काव करें। फूल आने से पहले इमिडाक्लोप्रिड 17.8 SL @ 0.3 मि.ली./लीटर का फोलियर स्प्रे करें और डेल्टा/स्टिकी ट्रैप (4/एकड़) लगाएं।

शूट व फल छेदक कीट नियंत्रण: एर्विट ल्योर (5–6/एकड़) स्थापित कर सामूहिक फँसाव करें। साइपरमेथ्रिन @ 1 मि.ली./लीटर या मेलाथियान 50 EC @ 2 मि.ली./लीटर का छिड़काव करें। छिड़काव से पहले सभी उपभोग योग्य फलों की तुड़ाई कर लें।

लौकी (Bottle Gourd):

पूसा समर प्रोफिलिक लॉन्ग, पंजाब लॉन्ग, पंजाब कोमल, पंजाब राउंड और पंत लौकी-4 जैसी किस्मों को कतारों के बीच 2 मीटर तथा पौधों के बीच 90 सेमी की दूरी पर लगाया जा सकता है। बीज की मात्रा 2 किग्रा प्रति एकड़ रखें। प्रति एकड़ 80 किग्रा यूरिया, 44 किग्रा डीएपी और 20 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश (एमओपी) का प्रयोग करें।

करेला (Bitter Gourd):

पूसा डोमौसामी, पंजाब-14, पूसा विशेष, कल्याणपुर बारहमासी सी किस्में गर्मी और वर्षा ऋतु में बोई जा सकती हैं। पंक्तियों के बीच 1–2 मीटर और पौधों के बीच 75–90 सेमी की दूरी रखें। बीज की मात्रा 2 किग्रा प्रति एकड़ हो। **उर्वरक अनुशंसा**: 87 किग्रा यूरिया, 43.5 किग्रा डीएपी, और 33.2 किग्रा एमओपी प्रति एकड़ डालें। ध्यान दें कि अधिक तापमान में अत्यधिक नाइट्रोजन देने से नर फूलों की संख्या बढ़ जाती है।

कद्दू (Pumpkin):

पूसा विश्वास, आज़ाद कद्दू-1, अर्का सूर्यमुखी, अर्का चंदन, पंजाब

सम्राट जैसी किस्मों को 2–2.5 मीटर × 75–90 सेमी की दूरी पर बोया जा सकता है। बीज दर 2 किग्रा प्रति एकड़ रखें। सड़ी गोबर खाद के साथ 80 किग्रा यूरिया, 44 किग्रा डीएपी, और 17.2 किग्रा एमओपी प्रति एकड़ डालें।

तुरई (Sponge Gourd):

वर्षा ऋतु के लिए पूसा चिकनी और पूसा सुप्रिया किस्में उपयुक्त हैं। बीज की मात्रा 2 किग्रा प्रति एकड़ रखें और 1.5–2.5 मीटर × 75–90 सेमी दूरी पर बोएँ। प्रति एकड़ 34.8 किग्रा यूरिया, 26 किग्रा डीएपी और 20 किग्रा एमओपी डालें।

खीरा (Cucumber):

जापानी, लॉन्ग ग्रीन, स्ट्रेट एट, पॉइंसेट और स्थानीय खीरे की किस्मों को 1.0–1.5 मीटर × 60–90 सेमी की दूरी पर बोया जा सकता है। बीज की मात्रा 0.8 से 1.2 किग्रा प्रति एकड़ रखें।

उर्वरक अनुशंसा: प्रति एकड़ 34.8 किग्रा यूरिया, 22 किग्रा डीएपी और 16.8 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश (एमओपी) का प्रयोग करें। अधिक मात्रा में खाद और सिंचाई से बचें। नाइट्रोजनयुक्त खाद उचित मात्रा में ही डालें ताकि केवल नर फूल (स्त्री फूल के बिना) न विकसित हों।

कीट एवं रोग नियंत्रण (कुकुर्बिट वर्ग की फसलों के लिए):

- लाल कद्दू बीटल को नियंत्रित करने के लिए एसिटामिप्रिड 20 WP @ 0.2 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें।
- फलों की मक्खी (फ्रूट फ्लाई) के नियंत्रण हेतु मीथाइल यूजेनॉल ट्रैप @ 2–4 प्रति एकड़ लगाएँ या मैलेथियन 1 मि.ली. + गुड़ 10 ग्राम/लीटर घोल का शाम को छिड़काव करें।
- पाउडरी मिल्ड्यू के नियंत्रण के लिए वेटेबल सल्फर @ 0.2% का छिड़काव हर 7–10 दिन में करें।
- फल सड़न से बचने के लिए फलों को ज़मीन से संपर्क में न आने दें और पके फल समय पर तोड़ें।

मशरूम (बटन/ऑयस्टर):
इसे अचार में प्रोसेस किया जा सकता है, सुखाया जा सकता है, या स्टीपिंग सॉल्यूशन का उपयोग करके संरक्षित किया जा सकता है।

फल
नई बगानों के लिए वर्षा ऋतु में पौधारोपण शुरू करें और पुराने बगानों में गैप भरें। पौधों को अधिकृत नर्सरी से खरीदें। सुनिश्चित करें कि नए ग्राफ्ट में कम से कम 4-6 फ्लश और 60-75 सेंटीमीटर की ऊंचाई हो, और ग्राफ्ट यूनियन पॉलीबैग में मिट्टी से 6 इंच ऊपर हो।

आम
आम के बगानों की गहरी जुताई करें, फसल के बाद तुरंत ताकि मीली बग्स के अंडे उजागर हो जाएं। मानसून के दौरान कम से कम एक बार महीने में निराई करें। आमों को सही परिपक्वता पर काटें, एंथ्राकोनोज़ को नियंत्रित करने के लिए मैनकोजेब या कॉपर ऑक्सी क्लोराइड का छिड़काव करें। छिड़काव को 8-10 दिन के अंतराल पर दोहराएं।

खट्टे फल
6-9 महीने पुरानी बड्डेड पौधों का चयन करें। नए वृद्धि को साइट्रस कैटरपिलर से 2-3 सप्ताह बाद बचाएं। साइट्रस सिल्ला, लीफ माइनर, सफेद मक्खी, और नींबू कैटरपिलर के खिलाफ डाइमिथोएट (1.5 मिली/लीटर) का छिड़काव करें। उचित जल निकासी सुनिश्चित करें। साइट्रस डिक्लाइन के लिए, हर 15 दिन में कॉपर ऑक्सी क्लोराइड (0.3%) या जिंक सल्फेट (1 किलोग्राम) + चूना (500 ग्राम) 200 लीटर पानी में छिड़कें। पहले शीर्ष ड्रेसिंग प्रति गड्ढा: यूरिया (100 ग्राम), एसएसपी (150 ग्राम), एमओपी (75 ग्राम), पौधे से 6 इंच दूर लागू करें।

अमरूद
मुंहपका-खुरपका रोग पहले महीने में हर 4-5 दिन में सिंचाई करें, फिर यदि पहले दो वर्षों में बारिश न हो तो हर 7-10 दिन में सिंचाई करें। आधार से 50-75 सेंटीमीटर तक साइड शूट्स हटा दें। मानसून के दौरान पत्तियों के मुरझाने से बचने के लिए उचित जल निकासी सुनिश्चित करें। सर्दी की फसल के लिए जुलाई में उर्वरक का

उपयोग करें। वायु परत बनाने की प्रक्रिया करें। जिंक और मैग्नीशियम की कमी के लिए, हर 15 दिन में 1 लीटर पानी में 2 ग्राम जिंक सल्फेट, 2 ग्राम मैग्नीशियम सल्फेट, और 5 ग्राम चूने का छिड़काव करें।

पशुपालन (गाय)

पशुओं को उच्च आर्द्रता और गर्मी से बचाने के लिए पर्याप्त छांव, वेंटिलेशन, और स्वच्छ पीने का पानी प्रदान करें। समय पर कृमिनाशक दवाइयां और मुंहपका-खुरपका रोग (FMD) और हेमरेजिक सेप्टीसीमिया (HS) जैसी प्रचलित बीमारियों के खिलाफ टीकाकरण सुनिश्चित करें।

खरीफ चारे की फसलें जैसे मक्का, ज्वार, या बाजरा उगाएं और निरंतर चारा आपूर्ति के लिए साइलज तैयार करने की व्यवस्था करें।

भेड़ और बकरियां

जलभराव और परजीवी से संक्रमित चराई क्षेत्रों से बचें; अत्यधिक चराई और बीमारी के जोखिम को कम करने के लिए चराई स्थलों को घुमाएँ। भारी बारिश के दौरान निमोनिया और फुट रॉट से बचाने के लिए मोबाइल या अस्थायी शेल्टर प्रदान करें। बाहरी और आंतरिक परजीवियों की नियमित जांच करें; PPR (पेस्टे दे पिटी रुमिनेंट्स) और एंटरोटॉक्सेमिया जैसी बीमारियों के खिलाफ समय पर टीकाकरण सुनिश्चित करें, प्रवास से पहले/बाद में कृमिनाशक दवाइयां दें, और गीले पर्वतीय चराई के दौरान फुट रॉट और निमोनिया से सुरक्षा सुनिश्चित करें।

महिलाओं के लिए पोषण सलाह

गर्मियों के मौसम में महिलाओं के लिए पोषण जागरूकता बेहद महत्वपूर्ण है, ताकि

उनका स्वास्थ्य, ऊर्जा और उत्पादकता बनाए रखी जा सके। यहां कुछ मुख्य बिंदुओं का संक्षिप्त सारांश दिया गया है:

संतुलित आहार

शरीर की मरम्मत और ऊर्जा के लिए मूंग और मसूर जैसी दालें, दूध, दही और पनीर शामिल करें। विटामिन्स के लिए हरी सब्जियाँ जैसे पालक, लौकी, तोरी, और फल जैसे तरबूज, खरबूजा, आम, और लीची खाएं, जो शरीर को ठंडा करने और इम्यूनिटी को बढ़ाने में मदद करेंगे। खनिज प्राप्त करने और मांसपेशियों को मजबूत करने के लिए बाजरा, मूंगफली, अलसी के बीज और तिल के बीज का सेवन करें, जिससे थकान भी कम होती है।

मौसमी खाद्य पदार्थों का सेवन करें

ठंडी चीजों जैसे खीरा, बेल का रस, और तरबूज का चयन करें। बेहतर पोषण और आसान पहुँच के लिए स्थानीय और ताजे उत्पादों को प्राथमिकता दें। इसके अलावा, घर का बना ठंडा छाछ का उपयोग करें, जिसमें दही, पानी, भुना हुआ जीरा, काला नमक और पुदीना मिलाएं।

शरीर में पानी बनाए रखें

प्रति दिन 10-12 गिलास पानी पिएं। पारंपरिक पेय जैसे छाछ, नारियल पानी, बेल का रस और आम पन्ना का सेवन करें। ताजे फलों का रस बिना चीनी मिलाए पिएं ताकि आपको प्राकृतिक पोषण मिल सके।

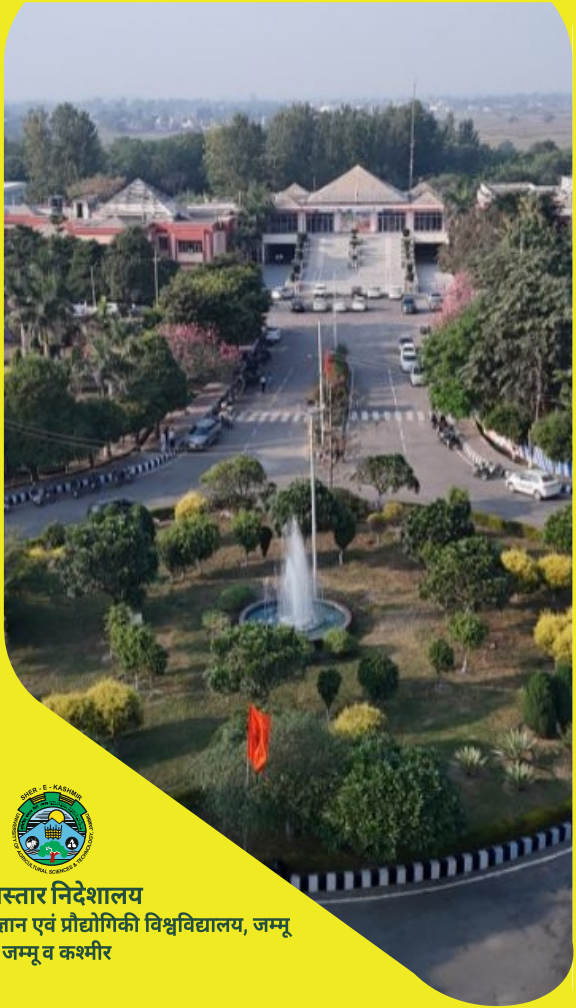

विस्तार निदेशालय

शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू

जम्मू व कश्मीर